Part I Hon

I मगध साम्राज्य से नन्द तक का उत्थान

Rise of Magadh empire up to Mahapadmananda?

Ans — आधुनिक बिहार के पटना तथा गया जिले को मिलाकर प्राचीन मगध राज्य बना था। सर्वप्रथम इसकी राजधानी गिरिव्रज थी। जरासंध के पिता वृहद्रथ ने मगध की राजधानी की नींव डाली थी किन्तु धीरे-धीरे इसका महत्व बढ़ता गया। सर्वप्रथम तो बौद्ध धर्म और जैन धर्म का प्रसार यहीं से हुआ दूसरे यह राज्य महान विद्वानों की जन्म भूमि थी कालान्तर में विक्रमशीला और नालन्दा विश्वविद्यालय का निर्माण भी यहीं हुआ जो विश्वविख्यात था। इस कारण से मगध राज्य एक प्रसिद्ध राज्य बनता जा रहा था। आर्यों के समय में मगध में अधिकर दस्यु निवास करते थे। वृहद्रथ ने इस प्रदेश को विजित कर आर्य साम्राज्य की स्थापना की वृहद्रथ का पुत्र जरासंध अत्यधिक महात्वाकांक्षी था। इसी जरासंध का वंश छठी शताब्दी ई० पू० तक चलता रहा तथा इसके बाद शिशुनाग वंश की स्थापना ने मगध पर राज्य करना प्रारंभ कर दिया। कुछ विद्वानों का विचार है कि शिशुनाग वंश धर्मवंश के पश्चात आया क्योंकि हर्यकवंश का शासक बिम्बसार महात्मा बुद्ध के समकालीन था तथा छठी शताब्दी ई० पू० में वह मगध पर शासन कर रहा था। अतः शिशुनागवंश इस वंश के पश्चात ही आया होगा।

हर्यकवंश का स्थापक बिम्बिसार था यह मगध का अत्यन्त प्रतापी और महात्वाकांक्षी सम्राट माना गया है इसके समय में ही मगध के उत्थान का युग प्रारंभ होता है। इसने जिस साम्राज्यवादी निति की नींव डाली थी वह शताब्दियों तक (अशोक की कलिंग विजय तक) चलती रही। तथा इस नीति के कारण मगध का महान साम्राज्य निर्मित हो सका। बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार बिम्बिसार महात्मा बुद्ध की मृत्यु के ६० वर्ष पूर्व सम्राट बना था। अतः यदि महात्मा बुद्ध की मृत्यु काल पूर्व ६ ई० पूर्व के समीप ही होगा। बिम्बसार ने काफी समय तक राज्य तथा मगध के लिए एक महत्वपूर्ण नीति को जन्म दिया।

बिम्बसार ने साम्राज्य वृद्धि के लिए दो प्रकार से प्रत्यन प्रयत्न किये (i) एक तो वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा
(ii) दूसरा दिग्विजय के द्वारा
बिम्बसार ने सर्वप्रथम कौशल के सम्राट प्रसेनजित की बहन के साथ विवाह किया जिससे उसे दो लाभ हुआ। सर्वप्रथम काशी का प्रदेश मगध को दहेज में मिला। और दूसरे भारत के सर्वश्रेष्ठ राज्य मगध का सम्बन्ध हो गया दूसरा विवाह बिम्बिसार ने भारत के सर्वश्रेष्ठ गणतंत्र वैशाली के शासक चेटक की पुत्री से किया चेटक वैशाली का लिच्छवी सम्राट था। इस विवाह से बिम्बिसार को नेपाल की ओर बढ़ने में सुगमता हुई तीसरा विवाह पंजाब के मद्र देश की राज्य कन्या से सम्पन्न हुआ। इस प्रकार इन तीनों विवाह से मगध का साम्राज्य का गौरव अत्यधिक बढ़ गया।

अपने राज्य को बढ़ाने के लिए बिम्बसार ने दिग्विजय की नीति अपनायी मगध का राज्य प्राकृतिक सीमाओं पर्वतों एंव नदियों से अवेष्ठित था। अतः अपने राज्य की बिम्बिसार को कोई चिन्ता नहीं थी। यहाँ पर सोने की खान होने के कारण यह राज्य अत्यधिक समृद्धशाली बन गया था। अतः बिम्बसार ने एक विशाल सेना का निर्माण करके अंग पर चढ़ाई की तथा विजय के द्वारा इस साम्राज्य को मगध सम्राज्य में सम्मिलित कर लिया इसके इसके अतिरिक्त अनेक राज्य भी उसने जीते थे क्योंकि उसके काल में मगध राज्यकाफी विशाल हो गया था उसने गिरिव्रज के स्थान पर पाटलिपुत्र को मगध की राजधानी बनायी। बिम्बसार ने विदेशों से भी राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित किये। गान्धार राज्य के दूत उसके दरबार में आया करते थे। बिम्बसार एक कुशल शासक था तथा उसके काल में मगध एक सुव्यवस्थित विशाल साम्राज्य के रूप में परिणित हो गया था।

बिम्बिसार का अंतिम समय बड़ा दुःखपूर्ण था वृद्धावस्था में उसने अपने पुत्र अजात शत्रु के हाथों

Scanned with CamSc

राज्यभार सौंप दिया किन्तु ~~आजा~~ अजातशत्रु ने राज्य के लोभ में अपने पिता की हत्या कर डाली तथा स्वयं सम्राट बन बैठा इस बात का पता हमें बौद्ध ग्रन्थ से मिलती है जिनमें लिखा है कि बाद में अजातशत्रु ने महात्मा बुद्ध के सम्मुख स्वयं ही स्वीकार कर लिया कि वह पितृहन्ता है।

बिम्बिसार की हत्या करके 492 ई० पू० में अजातशत्रु मगध का सम्राट बना। उसने अपने पिता की साम्राज्यवादी नीति की ही अनुसरण किया तथा मगध के साम्राज्य को विशाल बनाया। कौशल नरेश प्रसेनजित की बहन महाकोसला बिम्बिसार की पत्नी थी तथा बिम्बिसार की मृत्यु से उसे इतना कष्ट पहुँचा की उसकी मृत्यु हो गयी। मृत्यु के पश्चात प्रसेनजित ने काशी का प्रदेश जो मगध को दहेज में मिला था छीन लिया क्योंकि बिम्बिसार के हत्यारे को वह काशी प्रदेश नहीं दे सकता था अजातशत्रु काशी को पुनः प्राप्त करने के लिए कौशल पर आक्रमण कर दिया तथा प्रसेनजित को पराजित कर दिया। संधि के द्वारा प्रसेनजित को अपनी कन्या वजिरा का विवाह अजातशत्रु से करना पड़ा तथा काशी पुनः मगध को दहेज में मिल गयी। अजातशत्रु का दूसरा युद्ध वैशाली के विरुद्ध हुआ इस युद्ध में कई कारण बतलाये जाते हैं, किन्तु वास्तविक कारण अजातशत्रु की साम्राज्यवादी प्रवृत्ति थी जिसकी आँख में लिच्छवीयों का शक्तिशाली गणतंत्र काँटे की तरफ चुभता था अजातशत्रु ने पूरी तैयारी के साथ वैशाली पर आक्रमण किया तथा अपना हार का अनुभव होते ही छल द्वारा लिच्छवियों को पराजित कर उनका साम्राज्य हड़प लिया।

तत्पश्चात हिमालय के कुछ प्रदेशों को जीतकर उसने मगध राज्य को भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य बना दिया अजातशत्रु और अवंति के शासक प्रद्योत के बीच भी युद्ध हुआ था लेकिन इसी समय प्रद्योत के मृत्यु के पश्चात युद्ध का भी अंत हो गया।

Scanned with CamScanner

अजातशत्रु के पश्चात उसका उत्तराधिकारी सम्भवतः दर्शक था जिसका उल्लेख भारत के प्रसिद्ध नाटक "स्वप्न वासवदत्तम" में मिलता है। किन्तु बौद्ध और जैन ग्रन्थों के अनुसार उदायी अजातशत्रु का उत्तराधिकारी था उदायी का राज्यकाल ४६७ ई० पू० तक माना जाता है। उदायी भी अपने पूर्वजों की तरह साम्राज्यवादी था तथा अवन्ति को इसने अपने साम्राज्य में मिला लिया। कुसुमपुर नगर पाटलिपुत्र को शताब्दियों तक गौरवपूर्ण वंशों की राजधानी रहा। इसी सम्राट के समय में निर्मित हुआ तथा मगध की राजधानी बनाया गया था इसी नगर का प्रारम्भिक नाम कुसुमपुर था किन्तु कुछ समय पश्चात यह पाटलिपुत्र के नाम से सम्बोधित होने लगा।

उदायी के उत्तराधिकारियों के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी मालूम नहीं है। पुराणों के अनुसार तो नन्दिवर्धन तथा महानन्दि उसकी उदयी के उत्तराधिकारी था। महानन्दी ने एक दासी से विवाह कर लिया जिसका पुत्र महापद्मनन्द का उत्तराधिकारी था। परन्तु बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार उदायी और नन्दिवर्धन के बीच १३ अन्य राजाओं का उल्लेख मिलता है। बौद्धों के अनुसार उदायी के उत्तराधिकारी अनुरुद्ध मुंड तथा नागदर्शक थे, ये तीनों ही पितृहन्ता थे अंत: जनता ने इनका विरोध किया। नागदर्शक की हत्या करके उसका मंत्री शिशुनाग सम्राट बना जो नाग वंश का था। उसने अवन्ति आदि देशों पर विजय प्राप्त कर उत्तरी पूर्वी भारत में मगध साम्राज्य की घोषणा कर दी तथा पाटलिपुत्र तथा वैशाली में उसने अपनी राजधानियाँ स्थापित की। कौशल नरेश को भी शिशुनाग ने पराजित

शिशुनाग का उत्तराधिकारी काकवर्ण अथवा कालशोक था तथा उसके पश्चात उसके १० पुत्र गद्दी पर बैठे। इन्हीं में से नौवा पुत्र नन्दीवर्द्धन या कालशोक भी एक अत्यन्त वीर एवं प्रतापी सम्राट था उसने दक्षिणी भारत में कलिंग पर आधिपत्य स्थापित किया कश्मीर और पंजाब पर भी उसने आधिपत्य स्थापित कर लिया था किन्तु इन देशों में उसने अपने

साम्राज्य में नहीं मिलाया था। कालशोक के समय में वैशाली में बौद्धों की तृतीय सभा का अधिवेशन हुआ था। इस वंश का अंतिम शासक महानन्दी था तथा इसकी मृत्यु के पश्चात नंदवंश राज्य प्रारंभ होता है।

नंदवंश का संस्थापक महापद्मनन्द था

पुराणों के अनुसार वह अंतिम शिशुनाग वंश शासक महानन्दी की दासी से उत्पन्न हुआ था। किन्तु जैन अनुश्रुति के अनुसार वह उसके बड़े भाई का लड़का था किन्तु एक रानी उसपर आसक्त हो गयी जिससे वह राजा का वध करके राज्य का स्वतंत्र रूप हाथ में लेलिया धीरे-धीरे सम्राट राजकुमारों की हत्या कर वह सम्राट बन गया। वह अत्यन्त महत्वशाली सम्राट माना जाता है तथा पुराणों के अनुसार वह सम्पूर्ण भारत का सम्राट माना गया है पुराणों में उसे क्षत्रियों के विनाश करने वाला कहा गया है। सेना की निर्माण के लिए उसने प्रजा पर अनेक कर लगा दिये जिससे जनता उसका विद्रोह करने लगी।

Scanned with CamSc